May.2015 IJRSS Volume 5, Issue 2 ISSN: 2249-2496

''दूरदर्शन कार्यक्रमों का विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव''

अबधेश सिंह

शिक्षा विद्यार्थियों के आनन्दमयी या दुरुह प्रक्रिया है । जो इस बात पर निर्भर करती है कि बच्चा पढाई के शुरुआती दौर में कैसे अनुभवों से गुजरता है । यदि ये अनुभव सुखद, रोचक है तो वह अधिक सीखने लगता है जिसका उसके जीवन मूल्यों पर गहरा सम्बन्ध होता है । और यदि अनुभव दुःखद है तो मूल्यों पर विपरीत प्रभाव पढता है। परन्तु शिक्षा आजीवन चलने वाली गतिशील प्रक्रिया है जो कि जन्म से लेकर किसी न किसी रुप में मृत्युपर्यन्त चलती रहती है, विलियम ब्वायड के शब्दों में '' ऐतिहासिक काल से बहुत पहले मानव जब धीरे–धीरे जंगली जीवन छोड कर सामाजिक जीवन की ओर बढ़ रहा था, सीखने का कार्य निश्चित ही अधिक अंश में अनुभव और अनुकरण पर आश्रित था। किन्तु प्रस्तर युग में किसी न किसी प्रकार की व्यवस्था शिक्षा थी। इसका आभास उस काल से सम्बन्धित पशुओं के उन सुन्दर चित्रों से मिलता है। जो सींगों पर हाथी दाँत या गुफा की दीवारों पर खुदे हुये पाये गये हैं। '' शिक्षा प्रक्रिया द्वारा ही मनुष्य अपने आचार विचार तथा रहन सहन में परिवर्तन व परिमार्जन करता है तथा समाज में अपना उपयुक्त स्थान प्राप्त करता है। सभ्य एवं सुसंस्कृति समाज की परिकल्पना शिक्षा से ही संम्भव है।

आदि काल से लेकर शिक्षा प्रक्रिया में व्यापक परिवर्तन हुये है। प्राचीन काल में विद्यार्थी गुरुओं के घर अथवा गुरुकुल में जाकर शिक्षा ग्रहण करते थे, लेकिन आधुनिक समय में शिक्षा/ज्ञान संचार उपकरणों के माध्यम से विद्याथियों के घर पहुँच रहा है। आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिये हैं। पिछले कुछ दशकों से मास मीडिया–अखवार, रेडियो, टी.वी., कम्प्यूटर के क्षेत्र में आश्चर्य जनक रुप से बृद्धि हुयी है। इन संचार माध्यमों में दूरदर्शन वर्तमान शताब्दी का सर्व सुलभ, सस्ता एवं शसक्त माध्यम सावित हुआ है। मास मीडिया के रुप में इसकी व्यापक पहुँच को किसी भी स्थिति में कम करके नहीं आँका जा सकता है।

गिल 1986 कहते है कि टेलीविजन एक ही समय में अत्यधिक लोगों तक पहुॅचने की शक्ति रखता है तथा देश के बालकों में वांछित मूल्यों, व्यवसायिक एवं शैक्षिक जानकारी देने में विस्मय भूमिका निभा सकता है। अनुदेशन प्राप्त करने के अतिरिक्त टेलीविजन मूल्य ग्रहण करने, व्यवसायिक आकांक्षाओं एवं व्यवसायिक कौशलों के विकास में भी व्यापक रुप से उपयोग किया जा सकता है।

सर्वप्रथम दूरदर्शन निश्चित ही हमारे ज्ञान में वृद्धि करता है। हम जिन चीजों को देखते हैं। उन्हे सुनते भी है। इस प्रकार यह हमारे ज्ञान को पूर्ण करने में मदद

करता है। दूरदर्शन पर उपलब्ध समाचारों एवं महत्व पूर्ण मुद्दों पर बहस, विभिन्न विषयों पर बनी हुयी प्रलेख(डाक्यूमेन्ट्री) हमारे विचारों का भोजन सावित होती है।

इसी प्रकार सांस्कृतिक विरासत एवं मूल्यों को सम्भालने सहेजने एवं नयी पीढी को इतिहास व परम्पराओं से अवगत कराने में भी दूरदर्शन का महत्व पूर्ण योगदान है। विभिन्न धारावाहिक जैसे कि रामायण, महाभारत, डिस्कवरी ऑफ इण्डिया, शास्त्रीय गीत संगीत विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्व के कार्यक्रम हमारे सास्कृतिक एंव सामाजिक पृष्ठभ्मि को सुदृण बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

मनोरंजन के क्षेत्र में तो दूरदर्शन वरदान सावित हुआ है। यह हमारे सामाजिक दायरे को रोचक तरीके से बढाने में मदद करता है। हम विभिन्न फिल्म धारावाहिक सजीव मैचों का प्रसारण आदि घर बैठे देख सकते है।

अनुदेशन प्राप्त करने के अतिरिक्त दूरदर्शन कार्यकम विभिन्न मूल्यों को प्रभावित करते है जैसे– ज्ञानात्मक, सामाजिक, राजनैतिक आर्थिक, सौंन्दर्यात्मक धार्मिक, मानवीय, सृजनात्मक मूल्यों आदि के उन्नयन में दूरदर्शन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं ।

इस आधार पर स्पष्ट है कि ''दूरदर्शन कार्यकमों का विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर प्रभाव पढता है''

जेन्टाइल(2001) ने अपने अध्ययन में बाल चिकित्सकों द्वारा मान्य विश्वास को दृढता प्रदान करते हुये कहा कि ''टेलीविजन देखने से बालक के संज्ञानात्मक विकास एवं शैक्षिक निष्पत्ति तथा मूल्यों पर ऋणात्मक प्रभाव पढता है'' ।

नारायण(1987) ने अपने अध्ययन में पाया कि ''टेलीविजन देखने का मूल्यों तथा समाजीकरण के बीच स्पष्ट सम्बन्ध होता है'' ।

बेहरा(1991) ने अपने अध्ययन में पाया कि टेलीविजन के शैक्षिक कार्यकम प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में प्रमुख रूप से ज्ञानात्मक, बोधात्मक एवं प्रयोगात्मक कौशलों का विकाश करने में सहायक है साथ ही साथ इनके द्वारा शिक्षकों की दक्षता तथा मूल्यों में भी बृद्वि होती हैं, शिक्षकों के इन गुणों पर टेलीविजन कार्यकमों का सकारात्मक प्रभाव पढता है ।

प्रस्तुत शोध कार्य में यह जानने का प्रयास किया गया है कि दूरदर्शन कार्यकमों का विद्यार्थियें के सामाजिक मूल्यों पर किस प्रकार प्रभाव पढता है ।

उददेश्य– शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उददेश्य निर्धारित किये गये–

1– माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

2– माध्यमिक विद्यालयों के शहरी तथा ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन करना ।

शोध की परिकल्पना:– शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाऐं निर्धारित की गयी ।

1– माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नही है ।

2– माध्यमिक विद्यालयों के शहरी तथा ग्रमीण विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नही है ।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु 64 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है

उपकरण– प्रस्तुत शोध में शोधकर्ता ने डॉ प्रदीप कुमार तथा डॉ अजीत शंखधर द्वारा निर्मित और नेशनल साइकोलॉजीकल कारपोरेशन आगरा द्वारा मानकीकृत मापनी का प्रयोग किया है ।

परिसीमांकन– प्रस्तुत शोधकार्य जनपद फिरोजावाद के टूण्डला तहसील के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों तक सीमित रखा गया है ।

शब्दपरिभाषीकरण–

1–**मूल्य–** जीवन में ऐसे गुण जो व्यक्ति को आदर्श व्यक्ति बनाने में सहायक बनें। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण उसके सामाजिक मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन की आवश्यकता समझी।

2– **माध्यमिक विद्यालय–** जहॉ विद्याथियों को औपचारिक शिक्षा प्रदान की जाय तथा इनका स्तर कक्षा 9 से 10 तक हो ।

प्रयुक्त सांख्यिकी– प्रस्तुत शोध में केन्द्रिय प्रबृत्ति की माप तथा प्रमाप विचलन का प्रयोग किया जायेगा ।

सांख्यिकी विश्लेषण– शोधकर्ता ने ऑकडे एकत्रित कर निम्न प्रकार वर्गीकृत किया ।

सारणी –1

शहरी			ग्रामीण		
छात्र	छात्रा	योग	छात्र	छात्रा	योग
16	16	32	16	16	32

सारणी –2

परिकल्पना–1:–

क्रम सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की सं.	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी मूल्य
1.	शहरी–ग्रामीण छात्र	32	2.66	1.003	0.57
2.	शहरी–ग्रामीण छात्रायें	32	2.5	1.23	

क्त्रि62 चझण01सार्थक नही है अर्थात टी का मान क्त्रि62 पर टेबिल के 0.1 स्तर 2. 65 मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

सारणी–3

परिकल्पना–2:–

कम सं.	प्रदत्त	प्रदत्तों की सख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य
1.	शहरी विद्यार्थी	32	2.5	1.09	0.573
2.	ग्रामीण विद्यार्थी	32	2.66	1.445	

क्त्रि62 चझण01सार्थक नही है अर्थात टी का मान क्त्रि62 पर टेबिल के 0.1 स्तर 2. 65 मान से कम है। अतः परिकल्पना स्वीकृत होती है।

शोध के निष्कर्ष –

1– माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के सामाजिक मूल्यों पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नही है ।

2– माध्यमिक विद्यालयों के शहरी तथा ग्रमीण विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों पर दूरदर्शन कार्यक्रमों के प्रभाव का कोई सार्थक अन्तर नही है ।

सुझाव–प्रस्तुत शोध का भविष्य इस प्रकार से विस्तार कर सकते है।

1.प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों पर।

2.उच्च स्तरीय विद्यार्थियों पर ।

3.विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों पर।

4.विभिन्न क्षेत्रों के व्यक्तियों पर ।

संदर्भ सूची–

1.भटनागर, डॉ आर.पी.–शिक्षा अनुसंधन, लायल बुक डिपो, मेरठ.

2.गुप्ता, डॉ एस.पी.–आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद.

3.सिंह, अरूण कुमार–मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉ,मोतीलाल बनारसीदास,दिल्ली.

4.शिक्षामित्र,6(1)सितम्बर–2013,RNI UPBIL/2008/28046.ISSN N0- 0976-3406.